

२२. भितरी समृद्धि

प्रस्तावना

* इस पाठ के लेखक डॉ चन्द्रकान्त मेहता हैं। भलेही उनकी मातृभाषा गुजराती है पर हिंदी, संस्कृत और प्राकृत भाषाओं पर उनका प्रभुत्व काफी अच्छा है। 50 वर्षों से हिंदी और गुजराती लेखन के प्रति समर्पित डॉ मेहता गुजरात विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति हैं।

भारत सरकार ने उन्हें अपने 'साथ साथ चल रही किरण' निबंध संग्रह पर नेशनल अवॉर्ड से सम्मानित किया है। और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ ने गुजराती-हिंदी की सेतुरूप सेवाओं के लिए 'सौहार्द सम्मान' दिया है। उनकी अन्य कृतिओं की जो बात करे तो 'दिया जलाना कब मना है', 'दिशान्तर जरा ठहर जाओ', 'अन्वेषक और अन्य' आदि प्रमुख हैं।

प्रस्तुत निबंध में डॉ. मेहता ने हमें सही माइनों में समृद्धि किसे कहते हैं वह समझाया है। तो चलिए हम इस पाठ के माध्यम से जीवन जीने का सही तरीका समझते हैं।

स्वाध्याय

१. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

१. किसके बैठने पर जीवन – भक्ति कम हो जाती है ?

- (अ) द्रव्य भक्ति
- (क) तरल भक्ति
- (ब) धन भक्ति
- (क) प्रभु भक्ति

२. पोम्पीनगर के खंडहरों से मिले एक नर – कंकाल की मुट्ठी में क्या था ?

- (अ) चाँदी
- (ब) सोना
- (क) मोती
- (ड) हीरा

३. मनुष्य अंदर से कब तक अमीर था ?

- (अ) विज्ञान की खोज नहीं हुई थी तबतक
- (ब) टी.वी की खोज नहीं हुई थी तबतक
- (क) टेलीफोन की खोज नहीं हुई थी तबतक
- (ड) पैसे की खोज नहीं हुई थी तबतक

४. इनमे से वनस्पति विज्ञान का महान पंडित कोन बन गया ?

(अ) विवेकानंद

(ब) दयानंद

(क) डंकन

(ड) अरविंद

२. निम्नलिखित प्रश्नों के एक – एक वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. लोग अंत : करण की अमीरी की सुगंध कब खो देते हैं ?

उत्तर : जब लोग अमीर बनने की कुत्रिम चाव में कसे जाते हैं तब अंत : करण की अमीरी की सुगंध खो देते हैं ।

२. सुख का जादुगर और शांति का डकैत कोन – सा है ?

उत्तर : धन – सुख का जादुघर और शांति का डकैत है ।

३. आज जीवन का नियंत्रक परिबल कोन है ?

उत्तर : आज जीवन का नियंत्रक परिबल धन है ।

४. अमीर धन कैसे कमाते हैं ?

उत्तर : लेखक के अनुसार अमीर दूसरों को उल्लु बनाकर धन कमाते हैं ।

३. निम्नलिखित प्रश्नों के दो -तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. तृष्णा को परंपरागत डाकुरानी क्यों कहा गया है ?

उत्तर : डाकु का उद्देश्य किसी भी तरह दूसरे का माला लूटना होता है । तृष्णा का उद्देश्य भी किसी भी प्रकार से वांछित वस्तु पाना होता है । इसमें इन्हे कोई बुराई नजर नहीं आती । इस तरह डाकु और तृष्णा में कोई अंतर नहीं होता इसलिए तृष्णा को परंपरागत डाकुरानी कहा गया है ।

२. व्यापारी ने अपनी अंतिम सांस लेते समय रुपया की थैली मजबूती से हाथ में क्यों पकड़ रखी थी ?

उत्तर : मनुष्य की तृष्णा उसके अंतिम समय तक उसका साथ नहीं छोड़ती । व्यापारी के मन में अंतिम समय तक अपनी इच्छापूर्ति की उम्मीद थी । इसलिए अंतिम सांस लेते समय भी रुपयों की थैली मजबूती से हाथ में पकड़ी थी ।

३. आज वास्तविक धन कोन कोन से गुण में है ? क्यों ?

उत्तर : आज वास्तविक धन मनुष्य के सहृदयता, आत्मीयता, आशा, उल्लास तथा प्रेम आदि गुणों में है । इन गुणों के वृक्ष जो धन प्राप्त होता है, वह चिरस्थायी होता है । जबकि द्रव्य के रूप में कठिन परिश्रम से अर्जित किया धन स्थायी नहीं होता ।

४. आज मनुष्य की वृत्ति व प्रवृत्ति दोनों ही भ्रष्ट क्यों हो गई है ?

उत्तर : आधुनिक जीवन में धन जीवन को नियंत्रित करनेवाली शक्ति होने के कारण व्यक्ति धन अर्जित करने में व्यस्त है। गरीब अपनी जीविका चलाने के लिए और अमीर ज्यादा अमीर बनने के लिए। इसलिए मनुष्य की वृत्ति व प्रवृत्ति भ्रष्ट हो गई है।

५. डंकन के जीवन से क्या संदेश मिलता है ?

उत्तर : डंकन एक गरीब बुनकर के पुत्र होने के बावजूद भी अपनी ईच्छाशक्ति से वनस्पतिशास्त्र के विद्वान बने। उनकी प्रतिभा और खराब आर्थिक परिस्थिति को देख अनेक लोगो ने बड़े-बड़े चैक भेजे पर वे लालच में न आकर प्राकृतिक विज्ञान के विद्यार्थीओं के कल्याण में लगे रहे। उनके जीवन से यह संदेश मिलता है कि धन का उपयोग गरीबों की सहायता तथा अच्छे कार्यों के लिए करना चाहिए।

४. निम्नलिखित प्रश्नों के चार – पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. पोम्पीनगर के खंडहरो के कंकाल और एक व्यापारी के हाथ में अंतिम समय तक क्या था ? क्यों ?

उत्तर : पोम्पीनगर के खंडहरो में खुदाई समय में एक नरकंकाल मिला जिसकी मुट्ठी में सोना था। इसी प्रकार एक शहर के व्यापारी में अपनी अंतिम सांस लेते समय तकिये के नीचे से पैसे से भरी हुई थैली बाहर निकाली थी। उसने अपने अंतिम क्षण तक उसे मजबूती से पकड़ा हुआ था। इससे उनकी धन के प्रति तृष्णा दिखाई गई है जो मरते दम तक रहती है।

२. डंकन वनस्पतिशास्त्र का महापंडित कैसे बना ?

उत्तर : डंकन गरीब बुनकर का बेटा था। वह अनपढ़ दुबड़ा तथा अशक्त एवमगरीब परिवार से था। वह ढोर चराने का काम करता था और उसका मालिक उस पर अत्याचार करता था। वह सोला साल का हुआ तब उसने मूल अक्षर सिखने शुरू किए। फिर जल्दी जल्दी सिखता गया। जंगल में रहने की वजह से वनस्पति का ज्ञान था। उसने वनस्पतिशास्त्र का ग्रंथ खरीदकर वनस्पतिशास्त्र का गहरा अध्ययन किया और ऐसे वो वनस्पतिशास्त्र का महापंडित बना।

३. भारत के महापुरुषों को कीचड़ में खेलने वाले कमल क्यों कहा है ?

उत्तर : भारत के जो भी महानुभाव हुए उन्होंने अपने सफर की शुरुआत गरीबी, अभाव और कठिनाईयों से की थी। संघर्ष से होते हुए उन्होंने अपने अपने जीवन में बहुत बड़ी सफलता हांसल की। अपने अपने क्षेत्र में उन्होंने मूल्यवान योगदान हांसल किया है। ऐसा कोई काम नहीं किया जिसके लिए सर झुकाना पड़े। धन

के लालच से उन्होंने ने कभी अपनी नियत खराब नहीं की। गरीबी में रहकर उन्होंने ने बड़े – बड़े कार्य कर दिखाए इसलिए वे महापुरुष कहलाए।

४. ‘ बाहर ही नहीं अंदर ए श्रीमंत अथवा अमीर बनना ही पैसा पचाने की कला है। समझाइए।

उत्तर : दुनिया का हर भोतीकवादी इन्सान धन कमाना चाहता है और पैसेवाला बनकर वो समाज में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाना चाहता है। लेकिन वह इतने तक सीमित नहीं रहता गरीबी के बाद धन कमाकर वह अपने भीतरी व्यक्तित्व को भूल जाता है। अपने अच्छे दिनों में वो बुरे दिन भूलकर खुद को सर्वस्व समझने लगे तब उसका पतन होता है। उसकी जगह जब इन्सान अपने अच्छे दिनों में गरीबों की सहायता करता है। दुःखी के दुःखों को समझता है तो वह न केवल बाहर से पर अंदर से पर अंदरूनी सुंदरता व श्रीमती दिखता है और यही पैसे पचाने की कला है।

५. निम्नलिखित कथनों को समझाइए :

१. ‘ धन सूख का जादूगर भी है शांति का डकैत भी। ’

उत्तर : सुखमय जीवन जीने के लिए मनुष्य को धन कमाना जरूरी हो गया है। लेकिन उस धन से वह सुख सुविधा प्राप्त कर सकता है, शांति नहीं। धन प्राप्ति के बाद मनुष्य की तृष्णा बढ़ जाती है। वह अधिक से अधिक भौतिक सुविधा चाहता है, उसके चलते उसे कभी शांति नहीं मिलती। वह धन कमाने के पीछे पागलों की तरह भागने लगता है। इसलिए कहा गया है कि धन सूख का जादूगर है और शांति का डकैत भी।

२. ‘ पहले त्याग द्वारा आनंद की प्राप्ति होती थी पर अब मांग ने के बाद फैक देना ’ – मूल मंत्र हो गया है।

उत्तर : हमारे देश के गौरवशाली इतिहास में झोके तो हम देख सकते हैं कि जो भी महापुरुष हुए सबने त्याग का मार्ग अपनाया और वह महान बने। महापुरुषों ने अपना संपूर्ण जीवन दूसरों के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने त्याग का रास्ता अपनाया और वे अमर बन गये। उन्हें त्यागभावना और निस्वार्थ सेवा से आनंद प्राप्ति होती है। आज को अमीरवर्ग अपने सुख के पीछे भाग रहा है। त्याग की भावना उनमें पतन सी हो गई है।

३. ‘ आज जीवन में धन ही जीवन का नियंत्रक परिबल बन गया है ’।

उत्तर : आज के जमाने में पैसा सबकुछ है। हर छोटे से बड़े काम में पैसे की जरूरत पड़ती है। कोई काम बिना पैसे से नहीं होता। गरीब आदमी को अपनी जीविका

चलाने के लिए पैसे की जरूरत होती है। अमीर को अधिक अमीर बनने की तृष्णा होती है। आज के मनुष्य की वृत्ति और प्रवृत्ति दोनों ही भ्रष्ट हो गई है। आज धन ही नियंत्रण परिवल बन गया है।

६. सुचनानुसार लिखिए :

१. मुहावरों का अर्थ देकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

१. चैन की सांस लेना : मुसिबत (परेशानी) से छूटकारा पाना
उत्तर : मेरी बहन का ऑपरेशन होने के बाद हमने चैन की सांस ली।

२. खुन – पसीना एक करना : कड़ी महेनत करना
उत्तर : मोहन की माँ न खुन पसीना एक करके उसे पाला है।

२. दिए गए शब्दों के विशेषण बनाईए :

अमीर	-	अमोराना
परिवार	-	पारिवारिक
अभिमान	-	अभिमानी
परिश्रम	-	परिश्रमी
दिन	-	दैनिक
दर्शन	-	दर्शनीय

३. दिए गए शब्दों के भाववाचक बनाईए :

मनुष्य	-	मनुष्यता
डाकू	-	डकैती
व्यक्ति	-	व्यक्तित्व
दुर्बल	-	दुर्बलता
लज्जा	-	लज्जा

